जापान भारती

अंक ९/१० विक्रम संवत् २०५२ नवंबर/दिसंबर

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

বন্জন গুপ্ত (**रंजन गुप्त**)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

5-12-9 दाईसान एबातो बिल्डिंग,
उएनो ताइतो कू,
तोक्यो 110

फोन/फैक्स

03-3832-1631/3832-1641

फोन//फैक्स

सौरभ : 03-3462-0853

रंजन कुमार : 03-3473-6043

ranjan@twics.com

इस अंक में

हमारा पन्ना 2
आपका पन्ना 2
अनुभव - आ अब लौट चलें..3
ऐसा क्यों 4
संस्कृति - प्रार्थना के मन्त्र...5
संकटमोचन 6
चाँद की चाँदनी..9
भाषा चर्चा 10
कहानी - अंकल जी.....13
काव्यधारा 16
रसोई 18
बचपन 19
निवेदन 20
টোকিওতে পূজো ... 20
একটা পুতুলের গল্প ...21
ভারতে এক মাস ...22
আলুর পিৎসা ...23
খাদক - সেকাল ...24

हमारा पन्ना

इस वर्ष में जापान भारती का यह अंतिम अंक आपके हाथ में है। इस बार भी यह संयुक्तांक ही है। नए वर्ष में मासिक निरन्तरता का सँकल्प है और इस सँकल्प के यथासम्भव निर्वहन की भरसक चेष्टा भी रहेगी। अपने उद्देश्य के अनुरुप भाषा और सँस्कृति पर कुछ विशेष सामग्री इस अंक में भी संजोई है।

१९९५ के इस अंतिम आयोजन में भारतीय साहित्य और कला संसार की उन तमाम विभूतियों को विनम्र श्रद्धांजलि जिन्हें काल के क्रूर हाथ हम से छीन ले गए।

नया वर्ष काल के द्वार पर दस्तक दे रहा है। आप सबके साथ हमने भी उसके स्वागत में कुछ तैयारी की है। अगले अंक में बाल विशेषांक के अन्तर्गत कुछ चुनी हुई रचनाएँ आप तक पहुँचाने की योजना है। आशा है आप पसंद करेंगे। आने वाला वर्ष सबके लिए सुखकर हो, यही कामना है।

सौरभ सिंघल

आपका पन्ना

प्रिय सौरभ,

जापान भारती के सभी छः अंक मिले। हर अंक उत्कृष्ट एवं पिछले से बेहतर। इस अल्पावधि में ही **जापान भारती** मात्र एक पत्रिका नहीं वरन् एक भावना, एक विचार का मूर्त्तरूप बन गई है। इस सद्प्रयास, इस सफल प्रयास के लिये तुम एवं समस्त सम्पादक मंडल बधाई के पात्र हो। मेरी प्रार्थना है **जापान-भारती** की यह यश–यात्रा अनवरत जारी रहे।

पत्र लिखने में देरी हुई इसका मुझे खेद है। वस्तुतः **जापान-भारती** का हर अंक तुम्हें पत्र लिखने को प्रेरित करता आता। पत्र लिख नहीं पाया क्योंकि तुम्हारा सद्प्रयास कोरी पत्र की औपचारिकता नहीं वरन् रचनात्मक सहयोग का अधिकारी है। उपयुक्त लेख न लिख पाना ही इस देरी का कारण है। अब एक रचना भेज रहा हूँ।

भारत में आजकल उत्सवों का मौसम है। पहले रक्षा बंधन फिर कृष्ण जन्माष्टमी, अब दशहरा फिर दीपावली। विजयदशमी एवं दीपावली के पौराणिक संदर्भ में श्री हनुमान का एक विशेष महत्व है। आशा है लेख पसंद आयेगा।

एक बार पुनः हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

डा.सुन्दरलाल,
गणित विभाग,आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

जापान भारती के सभी अंक मिलते रहे हैं। आपके सौजन्य के प्रति कृतज्ञ हूँ। धन्यवाद के औपचारिक शब्द से मैं आपके उस कर्तृत्व के प्रति अपना आभार नहीं कर सकी जो आप भारत–जापान के संबंधों के लिए कर रहे हैं। वस्तुतः यह शब्द इस महत कार्य के लिए बहुत छोटा है।

जापानी विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाते हुए मैं दोनों देशों के बीच मधुर संबंध से अवगत होती रही हूँ और आपकी इस सुरुचिपूर्ण पत्रिका से इस संबंध के प्रति आश्वस्त हो गई हूँ। अपने इस सर्जनात्मक उपक्रम के लिए मेरा साधुवाद स्वीकार करें।

मेरी माँ श्रीमती शान्ति श्रीवास्तव बहुत मुग्ध हैं **जापान भारती** और जापान दोनों से। अतः उनकी कविता जापान **जापान भारती** के लिए भेज रही हूँ। सद्भाव सहित,

प्रोफेसर मीरा श्रीवास्तव,
तोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय,तोक्यो

हमारा पन्ना

इस वर्ष में जापान भारती का यह अंतिम अंक आपके हाथ में है। इस बार भी यह संयुक्तांक ही है। नए वर्ष में मासिक निरन्तरता का सँकल्प है और इस सँकल्प के यथासम्भव निर्वहन की भरसक चेष्टा भी रहेगी। अपने उद्देश्य के अनुरुप भाषा और सँस्कृति पर कुछ विशेष सामग्री इस अंक में भी संजोई है।

१९९५ के इस अंतिम आयोजन में भारतीय साहित्य और कला संसार की उन तमाम विभूतियों को विनम्र श्रद्धांजलि जिन्हें काल के क्रूर हाथ हम से छीन ले गए।

नया वर्ष काल के द्वार पर दस्तक दे रहा है। आप सबके साथ हमने भी उसके स्वागत में कुछ तैयारी की है। अगले अंक में बाल विशेषांक के अन्तर्गत कुछ चुनी हुई रचनाएँ आप तक पहुँचाने की योजना है। आशा है आप पसंद करेंगे। आने वाला वर्ष सबके लिए सुखकर हो, यही कामना है।

सौरभ सिंघल

आपका पन्ना

प्रिय सौरभ,

जापान भारती के सभी छः अंक मिले। हर अंक उत्कृष्ट एवं पिछले से बेहतर। इस अल्पावधि में ही **जापान भारती** मात्र एक पत्रिका नहीं वरन् एक भावना, एक विचार का मूर्त्तरूप बन गई है। इस सद्प्रयास, इस सफल प्रयास के लिये तुम एवं समस्त सम्पादक मंडल बधाई के पात्र हो। मेरी प्रार्थना है **जापान-भारती** की यह यश–यात्रा अनवरत जारी रहे।

पत्र लिखने में देरी हुई इसका मुझे खेद है। वस्तुतः **जापान-भारती** का हर अंक तुम्हें पत्र लिखने को प्रेरित करता आता। पत्र लिख नहीं पाया क्योंकि तुम्हारा सद्प्रयास कोरी पत्र की औपचारिकता नहीं वरन् रचनात्मक सहयोग का अधिकारी है। उपयुक्त लेख न लिख पाना ही इस देरी का कारण है। अब एक रचना भेज रहा हूँ।

भारत में आजकल उत्सवों का मौसम है। पहले रक्षा बंधन फिर कृष्ण जन्माष्टमी, अब दशहरा फिर दीपावली। विजयदशमी एवं दीपावली के पौराणिक संदर्भ में श्री हनुमान का एक विशेष महत्व है। आशा है लेख पसंद आयेगा।

एक बार पुनः हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

डा.सुन्दरलाल,
गणित विभाग,आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

जापान भारती के सभी अंक मिलते रहे हैं। आपके सौजन्य के प्रति कृतज्ञ हूँ। धन्यवाद के औपचारिक शब्द से मैं आपके उस कर्तृत्व के प्रति अपना आभार नहीं कर सकी जो आप भारत–जापान के संबंधों के लिए कर रहे हैं। वस्तुतः यह शब्द इस महत कार्य के लिए बहुत छोटा है।

जापानी विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाते हुए मैं दोनों देशों के बीच मधुर संबंध से अवगत होती रही हूँ और आपकी इस सुरुचिपूर्ण पत्रिका से इस संबंध के प्रति आश्वस्त हो गई हूँ। अपने इस सर्जनात्मक उपक्रम के लिए मेरा साधुवाद स्वीकार करें।

मेरी माँ श्रीमती शान्ति श्रीवास्तव बहुत मुग्ध हैं **जापान भारती** और जापान दोनों से। अतः उनकी कविता जापान **जापान भारती** के लिए भेज रही हूँ। सद्भाव सहित,

प्रोफेसर मीरा श्रीवास्तव,
तोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय,तोक्यो